उपसंहार

फणीश्वरनाथ रेणु का जीवन और व्यक्तित्व विलक्षण रहा है। अपने पिताजी के प्रभाव के कारण उनमें पढाई के अलावा साहित्य साधना ललित कला और राजनीति में रुचि निर्माण हो गयी थी। रेणुजी ने १९४२ के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। वे बहुभाषी थे। जीवन के विविध अनुभवों के कारण उनका व्यक्तित्व सशक्त बन गया था। इसी कारण उनके साहित्य में भी जीवन की सशक्त अनुभूति अभिव्यक्त हुयी है।

आँचलिक उपन्यासकारों में रेणुजी का स्थान अग्रणी रहा है। " मैला आँचल " के प्रकाशन को हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण घटना माना गया है। इसी उपन्यास के कारण ही रेणु को साहित्य क्षेत्र में महत्त्व प्राप्त हुआ है। " परती परिकथा " में संघर्ष के साथ नव - निर्माण का स्वर लबालब भर दिया है। इनके सभी उपन्यास देहाती जीवन से संबंधित है। देहात की अच्छाइयाँ बुराइयों सभी का चित्रण इनके उपन्यास में दिखायी देता है। राजनीतिक उपन्यासों की दृष्टि से " कितने चौराहे " यह महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। रेणुजी को श्रेष्ठ कहानिकार के रूप में भी महत्त्व प्राप्त हुआ है। इनकी कहानियों में भी आंचलिकता का सजग चित्रण हुआ है। " ठुमरी " नामक कहानी संग्रह की नौ कहानियाँ बहुतही परिश्रम से लिखी हुयी है। इनकी कहानियों के पात्रों में होनेवाले वाद - संवाद, कथावस्तु

पाठक के मन को प्रभावित करते है। कहानी उपन्यास के साथ - साथ उन्होंने रिपोर्ताज, संस्मरण, नेपाली क्रान्ति कथाएँ भी लिखी है।

फणीश्वरनाथ रेणुजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इनके व्यक्तित्व के साथ - साथ इनका कृतित्व भी श्रेष्ठ बन पडा है। इनके व्यक्तित्व का प्रभाव साहित्य पर भी पड़ गया है। ग्रामीण जीवन राजनीतिक संघर्ष जातिवाद का अखाड़ा बन गया है। रेणुजी ने यहाँ सूक्ष्म दृष्टि से यथार्थ उनके साहित्य में देखा जा सकता है।

आँचलिक उपन्यास की परंपरा हिंदी में " मैला आँचल " के साथ शुरू होती है। आंचलिक उपन्यास वे हैं जिनमें अविकसित अंचल - प्रदेश के आदमियों तथा आदिम जातियों का चित्रण किया हुआ मिलता है। पाश्चात्य साहित्य में प्रादेशिक या आंचलिक उपन्यासों का प्रारंभ १८०० से माना जाता है। अंग्रेजी के टॉमस हार्डी, फाकनर आदि उपन्यासकारों के उपन्यास के माध्यम से आंचलिक उपन्यास की शुरुआत हो गयी। उपन्यासों का स्वरूप देखनेपर यह स्पष्ट होता है कि हिंदी उपन्यासों का भी इसी प्रकार का आंचलिक स्वरूप है। हर एक आंचलिक उपन्यास का एक चुना हुआ विशिष्ट क्षेत्र होता है। मैला आँचल को जब हम देखेंगे तो आंचलिकता की दृष्टि से यह सफल बना हुआ उपन्यास दिखायी देता है।

आंचलिक उपन्यास की पात्रों के भरमार की जो प्राथमिक विशेषता है वह इसमें दिखायी देती है। रेणुजी ने जिस अंचल में अपना जीवन बिताया उसी का ही हूबहू चित्रण किया हुआ दिखायी देता है। वहाँ के रीति - रिवाज, परंपराएँ, जीवन यापन रेणुजी ने बारीकी से देखने के बाद उतारा है। इस उपन्यास में मानवी जीवन की अच्छाइयाँ, बुराइयाँ भी दिखायी देती है। अत: आंचलिक उपन्यासों की दृष्टि से यह श्रेष्ठ उपन्यास बन गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु विभिन्न खंडो में विभाजित की गयी है। " मैला आँचल " आंचलिकता से भरा हुआ सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। भाषा की दृष्टि से देखेंगे तो रेणुजी ने भाषा भी उसी अंचल से संबंधित ली है। विशिष्ट अंचल के शब्द - खम्हार, दबनी, मडनी, भुसकवा आदि सुंदर उदाहरण है। मैला आँचल की भाषा में आंचलिकता का गहरा हल्का स्पर्श और विवेचनायुक्त भाषा का सफल निर्वाह हुआ है। इसमें लोकप्रचलित भाषा की रचना हुयी है। यह भी आंचलिकता दर्शाने के लिए महत्त्वपूर्ण है। " मैला आँचल " की भाषा पर आंचलिक मिट्टी का गहरा प्रभाव दिखायी देता है। इसी के कारण ही आज हिंदी उपन्यास साहित्य में " मैला आँचल " महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। और यह उपन्यास महत्त्वपूर्ण बनने के लिए यहीं कारण है कि उन्होंने इस परिस्थिति को भोगकर इसका निर्माण किया है।

हिंदी साहित्य में " मैला आँचल " की तरह दूसरे और भी उपन्यास हैं, जिनमें आंचलिकता को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। आंचलिक उपन्यासों में गाँव के जीवन यथार्थ को बड़ी गहराई से चित्रित किया जाता है। उन उपन्यासों में गाँव की टूटन और संघशक्ति का चित्रण भी मिलता है। " मैला आँचल " में लोकसंस्कृति के साथ आधुनिक चेतना दिखायी देती है। कुछ शहरी लेखकों का आरोप है कि आंचलिक उपन्यास का लेखन आधुनिकता से पलायन है बलचनमा नामक उपन्यास भी नागार्जुन का आंचलिक उपन्यास है। " अलग - अलग वैतरणी " उपन्यास आधुनिकता बोध को ग्रामीण - परिवेश में स्पष्ट करता है। आंचलिक उपन्यास भाषा की दृष्टि से भी नया आयाम लेकर आये है। अत: आंचलिक उपन्यासों के द्वारा जीवन के अनजाने आयामों का उद्घाटन हो रहा है।

" फणीश्वरनाथ रेणु " का आंचलिक उपन्यास " मैला आँचल " में बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव के समाज का चित्रण किया है। " मैला आँचल " का कथानक पूर्णिया जिले के एक पिछड़े गाँव मेरीगंज की कथा है। इस अध्याय में उच्चवर्गीय, मध्यमवर्गीय, निम्नवर्गीय समाज का चित्रण किया है। इस उपन्यास में मेरीगंज गाँव की चार टोलियों का चित्रण किया है। ये चार टोलियाँ उच्चवर्ग के अंतर्गत आती है। राजपूत और कायस्थ टोली में पहले से झगड़े होते

आये हैं। यादव टोली के मुखिया खेलावन यादव भ्रष्टाचारी है। इन्हें लोग नया मातबर कहते है। ब्राहमण टोली के लोग राजपूतों को समझाने का कार्य करते है। इसके अंतर्गत उच्चवर्गीयों के व्दारा निम्नवर्गीयों के किये हुये शोषण का भी चित्रण किया है। उपन्यास में निम्नवर्गीयों के शोषण की सबसे बड़ी समस्या दिखायी गयी है। इस समस्या को बल देने का कार्य तहसीलदार ~~खेलावनसिंह यादव~~ आदि स्वार्थी प्रवृत्तियाँ का है। ये लोग भूमिहीन मजदूरों को अनेक प्रकार की यातनाएँ देकर अपनी आत्मसंतुष्ट करते है। उच्चवर्गीय लोग आर्थिक स्तर पर विषमताएँ झेलते हुये भी सामाजिक तथा आर्थिक अधिकारों की प्रश्नों पर एकजूट होकर निम्न - वर्ग का विरोध करते है। उन्होंने निम्नवर्गीय समाज का दोहन करके एक बडे पारस्परिक मानवीय संबंध को तोड़ डाला है। तहसीलदार पूरे गाँव के लिए निर्दयी व्यक्ति है। नीलहे साहबों ने इन्हीं मूक इन्सानों का पसीना बहाया है। यहाँ डॉ॰ प्रशांत उच्चवर्गीयों के अंतर्गत आते है। परंतु ये शोषित, अभावग्रस्त, भोली जनता के प्रति अत्यंत संवेदनशील है। इसीलिए इनका चरित्र जमींदारों, तहसीलदारों से बिल्कुल विरोधी रूप में प्रकट हुआ है।

" मैला आँचल " के मध्यवर्गीय लोग भी निम्नवर्ग के लोगों के साथ झगडते हैं। कालीचरन, बालदेव, मध्यवर्ग के पात्रों में आते

है। कालीचरन में पिछडे वर्ग के बारे में प्यार भराहुआ है। इसके लिए वह झगडता रहता है। धर्म के नामपर होनेवाले अत्याचार यह भी एक बडी समस्या है। जिसे दूर करने का कार्य भी मध्यवर्ग के पात्र करते हैं। मध्यवर्गीय पात्र भावनात्म होने के कारण कुछेक स्थलों पर आरोपित कहे जा सकते है। चरखा सेंटर की मंगलादेवी मध्यवर्गीय समाज का प्रतीक है। परंतु व्यभिचारिणी भी है। गाँव में विकसित हो री नयी चेतना मलोरया सेंटर तथा चरखा सेंटर खुलने के माध्यमसे व्यक्त होती है। मंगलादेवी का चरित्र भी बदलते हुये भारतीय नारी के परिवेश को अभिव्यक्त करता है। मध्यवर्गीय पात्रों में कोई पात्र गांधीवाद का अर्थ नहीं जानते तुमरितदास जैसा पात्र है जिसे मध्यवर्गीय होने के बावजूद भी उसे गरीबों से सहानुभूति नहीं है।

मध्यवर्गीय समाज के लोगों में कुछ लोग समाज के लिए घातक भी है। बालदेव प्रारंभ में अच्छा सुराजी था बाद में बगुला भगत बन जाता है। राजनीतिक कार्यकर्ताओं में वह भी पाखंडी और भ्रष्टाचारी बन गया है। मध्यवर्गीयों में कालीचरन जैसे पात्र आदर्श की ओर बढते है। इस उपन्यास के मध्यवर्गीयों का चित्रण देखने के पश्चात यह बात ध्यान में आती है कि इनमें अलग - अलग गुण अवगुण भरे हुये है। उपन्यासकार ने मध्यवर्गीय लोगों के चरित्र को अंतर्विरोधों को कुशलता से चित्रित किया है।

रेणुजी ने इस उपन्यास में निम्नवर्गीय समाज के चित्रण के अंतर्गत उनका सामाजिक पक्ष, आर्थिक पक्ष, धार्मिक परिस्थिति, सांस्कृतिक पक्ष इसकी ओर ध्यान दिया है। मेरीगंज का सामाजिक जीवन अव्यवस्थित बन गया था। वहाँ के निम्नवर्गीय लोगों का शोषण यह उपन्यास की सबसे बडी समस्या है। निम्नवर्गीय लोगों के घरों में जमीनदारों की घूसपैठ थी। इस वर्ग की स्त्रियों को केवल भोग्या के रूप में ही जाना जाता था। उदाहरण के रूप में मँहगूदास की स्त्री सुविधापूर्ण जीवन जीने के लिए ऊँची टोले के अनेक लोगों के साथ संबंध रखती थी। अपनी बेटी फुलिया की शादी भी इसी के कारण वह नहीं करना चाहती। उस समाज में स्त्री एक पैसा कमाने का ही साधन था। वहाँ के समाज में अन्याय, अत्याचार फैल गया था। जमींदारों ने संथालों को अपनी भूमि से हटा दिया था। शोषित लोगों में अन्याय सहते रहने की एक परंपरा ही भर गयी थी। शोषितों का प्रतिनिधित्व निम्नवर्ग के संथाल जाति के लोग करते है। समाज में इनकी फरियाद को सुननेवाला कोई नहीं है। गोलहे साहबों के नील के हौजों में भी इन्ही मूक इन्सानों का पसीना बहाया जाता था। समाज में ऐसे लोगों के लिए घर या अपने झोपडे भी नहीं है। ये लोग बैल जैसे मेहनत करते है। मजदूरों का भी शोषण किया जाता है।

आर्थिक दृष्टि से भी देखा जाय तो लोग दो रुपये मजदूरी के लिए गाँव छोडकर जाते थे। इसमें एक व्यक्ति का भी पेट नहीं भरता। अनाज की ऊंची दर से होनेवाला लाभ उच्चवर्ग के लोग ही लेते थे। पैसो के लिए माँ बेटी को बेच भी सकती है। आर्थिक परिस्थिति कमजोर होते हुये भी लोग नशीले द्रव्यों का सेवन करते हैं। अंत में पीडित वर्ग जागता हुआ दिखाया गया है। नेतागण भोगी हुयी शोषित जिंदगी के विरोध में खडे होकर क्रांति का संदेश दे रहे है। अत: वर्गद्वंद्व की भावना भी निर्माण हो गयी है।

धार्मिकता के नामपर पाखंड, आडंबर, अंधविश्वास, और व्यभिचार की समस्या बल पकड रही है। धर्म के नामपर दासियों को भोग्या समझकर भक्त लोग शोषण करते है। लछमी जैसे अबोध स्त्री को महंथ जो बिल्कूल बूढा था वह भोग्या स्त्री समझकर उसको भोगता था। तब लछमी रोती थी। जिसे सुनकर पत्थर भी पिघल जाए। रामदास के रूप में पाखंड का अच्छा सा उदाहरण दिखाई दिया है। धर्म के नामपर बगुला भगत नागा बाबा को लछमी और मठ की संपत्ति को पाने की लालसा निर्माण होती है। पाखंड समाज में एक ऐसा वर्ग है जो अपने स्वार्थ के लिए प्रत्येक प्रकार की प्रगति का विरोध करता है। धर्म के नामपर अनेक प्रकार की विसंगतियों और पाखंडो को बढावा देकर अधर्म फैलाता है और चारित्र्य के पतन की समस्या निर्माण होती है।

रेणुजी ने सूक्ष्म संकेतों के माध्यमसे यह स्पष्ट किया है कि धार्मिक पाखंड की इस प्रवृत्ति को जन - चेतना और शिक्षा के द्वारा शीघ्र रोका जा सकता है।

निम्नवर्गीय लोग आर्थिक परिस्थिति से कमजोर होते हुये भी अपनी संस्कृति तथा परंपरा से अलग नहीं होते। यहाँ होली के त्यौंहार को जादह महत्त्व दिया है। होली के दिन लोग इकट्ठा मिलकर गाते - नाचते है। इन लोगों में बिदापत नाच, समदाऊन भजन, बीजकपाठ, आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाते है। इन लोगों में वर्षा न होने पर इंद्र को रिझाने के लिए जाट - जटिन का खेल खेलने का रिवाज है। उनका विश्वास है कि इस खेल से इंद्र महाराज अवश्य प्रसन्न होंगे। इसमें इन लोगों का अंध : विश्वास दिखायी देता है। सामूहिक मछलियाँ पकड़ने का पर्व " सिखा " कहलाता है। इस गाँव में अनेक लोककथाएँ प्रचलित है। इस प्रकार इनका सांस्कृतिक जीवन " मैला आँचल " में चित्रित हुआ है। जो लोगों के जीवन में आनंद निर्माण करता है।

इस प्रकार रेणुजी के " मैला आँचल " उपन्यास के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उन्होंने इस उपन्यास में समाज के व्यापक चित्रण को महत्त्व दिया है। क्योंकि वे व्यक्ति की अपेक्षा समाज के

जीवन को चित्रित करना चाहते थे। इसी कारण इस उपन्यास में समाज के विविध अंग उनकी अच्छाइयाँ और कमजोरीयाँ उनके निहित स्वार्थ द्वंद्व और संघर्ष आदि को रेणुजी ने मुखर कर दिया है। रेणुजी ने इसके लिए पूर्णिया जिले का क्षेत्र चुना किंतु व्यापक संदर्भों के कारण वहाँ के चरित्र वहाँ की परिस्थितियाँ और वहाँ के संघर्ष आंचलिकता से उठकर पूरे भारत के बन जाते है। आंचलिक विशेषताएँ पूर्णिया जिले की है। किंतु उसके चरित्र मानवीय है। और उसके समाज के द्वंद्व संघर्ष और अंतर्विरोध पूरे भारतीय समाज के दर्शन कराते है। इसी में रेणुजी की सफलता है और उनके " मैला आँचल " की भी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ·क्र·	ग्रंथ	लेखक	संस्करण	प्रकाशन
1	2	3	4	5
1·	मैला आँचल	फणीश्वरनाथ रेणु	1984	राजकमल प्रकाशन
2·	फणीश्वरनाथ और आंचलिक उपन्यास·	अंजली तिवारी	1983	
3·	रांगेय राघव और आंचलिक उपन्यास	शम्भुसिंह	1979	सुशील प्रकाशन, अजमेर
4·	"मैला आँचल" की रचना प्रक्रिया	डा·देवश ठाकूर	1987	वाणी प्रकाशन
5·	हिन्दी तथा अंग्रेजी के आंचलिक उपन्यासो का तुलनात्मक अध्ययन	डा·राजकुमारी सिंह	1988	अन्नपूर्णा
6·	नालन्दा विशाल शब्दसागर	संपादक· मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	1988	
7·	ज्ञान शब्दकोश	वही	1986	
8·	हिन्दी के आंचलिक उपन्यास	डा·मृत्युंजय उपाध्याय	1989	चित्रलेखा
9·	सारिका नवम्बर	नन्ददुलारे वाजपेयी	1961	--
10·	हिन्दी रिव्यू मैगजीन	देवराज उपाध्याय	मई 1956	
11·	कल्पना (मासिक)	विवेकीराय	जुलाई 1972	
12·	हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विधान	डा·प्रदिपकुमार शर्मा	1990	अभय प्रकाशन
13·	हिन्दी उपन्यास	डा·रामदरश मिश्र	1982	राजकमल प्रकाशन

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR
BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

1	2	3	4	5
14·	आज का हिन्दी उपन्यास	डा·इन्द्रनाथ मदान	--	राजकमल प्रकाशन
15·	नये उपन्यासों में नये	डा·दंगल झाल्टे	1984	प्रभात प्रकाशन
16·	हला युग कोश	संपादक - जयशंकर जोशी	--	--
17·	व्यावहारिक हिन्दी कोश	" डा·भोलानाथ तिवारी	--	--
18·	आँचलिक उपन्यासकार और रेणु	डा·सत्यनारायण उपाध्याय	--	--